02 / 02 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदा अलंकारी स्वरूप में स्थित रहने से

स्वयं का और बाप का साक्षात्कार अनुभव कराना

➢➢ मै आत्मा सदा अलंकारी, निरहँकारी आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मै रूहानी स्नेह की महफिल में रूहानी शमा से मिलन मनानेवाली रूहानी परवानी हूँ

→ मै पद्मापदम भाग्यशाली आत्मा हूँ

■ मै फिदा होने वाली रूहे पतंगा हूँ

➳ _ ➳ सारे कल्प में एक ही बार यह रूहानी स्नेह की महफिल लगती हैं

→ स्वयं अलमाइटी अथॉरिटी बाप इस महफिल मे आए हैं

■ मुझ आत्मा के भाग्य का वह स्वयं वर्णन कर रहे हैं

➢➢ ऐसी पद्मापदम भाग्यशाली मुझ आत्मा को देख बाप हर्षित हो रहे हैं

➳ _ ➳ मै आत्मा अपने भाग्य को सुमिरन करती रहती हूँ

→ सुमिरण करते करते बाप की सिमरणी का मणका बनती जा रही हूँ

→ मुझ आत्मा को कलयुग के अंत में भी सुमिरन करनेवाले भक्त भी अपने को भाग्यशाली समझते हैं

■ मै आत्मा, भक्तों के भाग्य बनाने वाली मास्टर भाग्य विधाता हूँ

➢➢ ऊंच ते ऊंच बाप द्वारा मुझ आत्मा का ऊंच ते ऊंच जीवन सफल कर रही हूँ

➳ _ ➳ मुझ आत्मा के जड़ चित्रों के समक्ष इस कलयुग के अंत में भी

→ सिमरन करने वाले भक्तों की लंबी लाइन लगती हैं

■ मै बाप की समरणी का समीप मणका हूँ

➳ _ ➳ मै ऊंच भाग्यशाली आत्मा कदमो में पद्मापदम भाग्य जमा करनेवाली आत्मा हूँ

→ मै ब्रह्मा मुखवंशावली पुरुषोत्तम ब्राह्मण आत्मा हूँ

■ मै अखंड ज्योति स्वरूप आत्मा हूँ

➳ _ ➳ वाह मेरा बाबा वाह

➳ _ ➳ वाह मधुबन वाह

➳ _ ➳ वाह संगमयुग वाह

➳ _ ➳ वह मेरा भाग्य वाह

→ बड़े ते बड़े ब्राह्मण कुल की अनेको की ज्योति जगानेवाली आत्मा हूँ

→ बाबा की याद से मुझ आत्मा की अखंड ज्योति की स्मृति सदा जगी रहती हैं

→ अखंड ज्योति अर्थात कभी भी बूज़ने वाली नहीं

→ मै आत्मा सदैव अपनी जागती ज्योति को चेक करनेवाली आत्मा हूँ

→ अखंड ज्योति का सतरंगी नूर निरंतर चारो ओर फैलता रहता हैं

- ज्योति की निशानी हैं
- सदा स्मृति स्वरूप और
- सदा समर्थी स्वरूप
- मुझ आत्मा की स्मृति और समर्थी साथ साथ रखने वाली आत्मा हूँ

➢➢ मै निरन्तर स्मृति स्वरूप आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मै समर्थ आत्मा हूँ

→ मै मास्टर सर्व शक्तिवान आत्मा हूँ

➳ _ ➳ बापदादा मुझ आत्मा को "साकारी सो अलंकारी" बनाते जा रहे हैं

→ बापदादा स्वयं मुझ आत्मा का सर्व शक्तियों से श्रृंगार कर रहे हैं

- बापदादा मुझ आत्माके अलंकारी स्वरूप का 16 श्रृंगार कर रहे हैं

➢➢ मै आत्मा सोलह कला सम्पूर्ण बनती जा रही हूँ

➳ _ ➳ मै आत्मा अविनाशी ज्ञानरत्नों से श्रृंगारी, साक्षात्कार मूर्त आत्मा हूं

→ सदा अलंकारों से सजे सजाये रहनेवाली आत्मा हूँ

- मै शिवशक्ति हूँ

➳ _ ➳ यह अलंकार मुझ ब्राह्मण ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ अविनाशी श्रृंगार हैं

→ मै कंबाइंड स्वरुप आत्मा हूँ

- मै ब्राह्मण कुल भूषण आत्मा हूँ

➢➢ कंबाइंड स्वरूप से अपनी भुजाएं मजबूत बनाती जा रही हूँ

➳ _ ➳ मुझ आत्मा द्वारा भक्तों को बाप का साक्षात्कार करा रही हूँ

→ मै साक्षात्कार मूर्त आत्मा हूँ

- मै समर्थ आत्मा हूँ

➳ _ ➳ बापदादा मुझ अलंकारी स्वरूप का साक्षात्कार भक्तो को करा रहे हैं

→ मेरे जड़ चित्रों के सामने भक्त लोग अखंड दीपक जगाते हैं

- मै पद्मापदम भाग्यशाली आत्मा हूँ

➳ _ ➳ दीपावली मना रहे हैं

➳ _ ➳ बाप के संग की अनुभूति से रंग बिरंगी रंगो की वर्षा कर रहे हैं

➳ _ ➳ रासलीला रचाते हैं

➳ _ ➳ और मुझ आत्मा के नैनो से, मस्तक से, हस्तो से,सर्व गुणों की,सर्व शक्तियों की भक्तो पर वर्षा हो रही हैं

→ अतिन्द्रीय सुख के आनंद की अनुभूति हो रही हैं

→ मै स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा हूँ

→ सर्व भक्तो को अपने स्वदर्शन कराती का रही हूँ

→ सर्व भक्त आत्माएं बाप के संग के रंग में रंगाती जा रही हैं

→ स्वयं के दर्शन से अनेक आत्माएं स्मृति स्वरूप बनती जा रही हैं

- बाबा की गोदी में झूल रही हैं
- बाबा के दिलतख्त पर झूल रही हैं
- बाबा से अपना वरसा ले रही है
- बाप में समाते समाते मिलन मना रही हैं

➢➢ मै आत्मा सदा अलंकारी, निरहँकारी आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मुझ निज स्वरूप से चारो ओर सातो रंगो की लाइट माइट सारे विश्व में फैल रही हैं

→ मै अलंकारी स्वरूप आत्मा हूँ

- मै लाइट माइट स्वरूप आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मै स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा हूँ

→ मै नीर-अहंकारी निराकारी स्थिति में स्थित हूँ

- मै आत्मा सदा विजयी आत्मा हूँ

➢➢ मै अखंड दीपक विश्व को रोशन करनेवाली आत्म दीपक हूँ

➳ _ ➳ जहाँन को रोशन करने वाली जागति ज्योत हूँ

→ मै बाबा के नैनो का नूरे दीपक हूँ